

# व्यर्थ संकल्प क्यों चलते हैं?

जैसे विज्ञान का एक विषय है कि कोई भी चीज जब हम देखते हैं तो उसके बाद हम सोचते हैं। तो इसका मतलब ये हुआ कि पहले हम देखते हैं फिर उसके बारे में संकल्प आता है। अगर कोई चीज हमने देखी न हो तो हमें संकल्प आ नहीं सकता। इसका अर्थ ये हुआ कि जब भी कोई भी विकार हमारे अन्दर पैदा होता है तो पहले हमारे संकल्प में आता है उसके बाद बाहर आता है तो परमात्मा के द्वारा बताये गए ज्ञान और संज्ञान से एक चीज तो समझ में आ गई कि हमारे जीवन का जो सबसे पहला विकार है देह को देखना और देह को देखने के बाद काम विकार की उत्पत्ति होती है या कोई भी कामना उत्पन्न होती है चाहे वो देखने की कामना हो या बात करने की कामना हो, या उससे मिलने की कामना हो, कोई भी कामना जब उत्पन्न होती है तो वो पहले संकल्प में आता है। और उस संकल्प की पूर्ति न होने से क्रोध पैदा होता है।

तो इसका मतलब हुआ कि काम अर्थात् कोई भी कामना, व्यर्थ दृष्टि पैदा करने का आधार बनी। मतलब जिस व्यक्ति के लिए आया उसके लिए व्यर्थ पैदा हो गया। और उससे हमारी पवित्रता में बाधा आई। मतलब सीधा है, साफ है कि कोई भी विकार के वश हमारे कोई भी संकल्प हैं तो व्यर्थ हैं। और जो व्यर्थ हमारे अन्दर चलता है उस व्यर्थ का कोई भी पैरामीटर नहीं है। जैसे परमात्मा हमको सिखाते हैं और बहुत गहरे ज्ञानी हम आत्म्यायें सीखती भी हैं और बार-

बार उसको कहते भी हैं कि देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो। तो इसमें पहला शब्द जो आता है देह को भूलना मतलब दैहिक दृष्टि, देह भान, हमारे सारे विकारों का रूट है, जड़ है। जहाँ से सब कुछ उत्पन्न होता है तो जो भी इन विकारों के वश है उनके ही व्यर्थ संकल्प चलते हैं, चाहे वो कोई भी विकार क्यों न हो। क्योंकि वो कोई भी विकारों के वश है उसी के अन्दर ये संकल्प आता है कि ये व्यक्ति ऐसा क्यों है! इसको ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि विकार के वश संस्कार बने हैं उसके। उन संस्कारों के आधार से तुलना करके वो उस व्यक्ति से बातचीत करता है, उससे मिलता है और उससे मिलकर आगे बढ़ने की कोशिश करता है।

हम सबके अनुभव में ये बात पूरी तरह से आ चुकी है कि हर एक आत्मा के संस्कार अलग-अलग हैं लेकिन उस आत्मा को हम अपने हिसाब से जैसे ही जज करने की कोशिश करते हैं इसका मतलब ये कि मैं उस आत्मा को अपने आधार से चलाना चाहता हूँ। या उसको अपने आधार से परिवर्तन करना चाहता हूँ। अब देखो आज तक का जो आपका अनुभव है वो क्या कहता है? चाहे वो ज्ञानी आत्मा है, चाहे अज्ञानी आत्मा है, उसको अपने किसी गुण का, किसी विशेषता का थोड़ा भी अभिमान आता है और दूसरा वो दूसरे के अन्दर थोड़ी कमी देखता है तो हमेशा उस कमी को देखने के बाद अपने आप को आगे बढ़ता हुआ

फील करता है और दूसरों को नीचा देखने की कोशिश करता है मतलब जब कोई व्यक्ति आगे बढ़ रहा है, या पीछे हट रहा है उन दोनों का आधार क्या हुआ? जो कुछ वो अपनी विशेषता और अपने गुण में, पुरुषार्थ में थोड़ी वृद्धि देखता है तो उसे लगता है कि सामने वाले के अन्दर ये सारी चीजों की कमी है। मतलब सीधा और साफ



है कि कमी अपने पुरुषार्थ की नहीं है लेकिन नाम, मान और शान में किसी भी व्यक्ति को आगे न बढ़ाना या मैं खुद आगे न बढ़ूँ, एक आधार बन जाता है। जिससे और ज़्यादा व्यर्थ संकल्प चलते हैं।

जिस घर में चाहे वो माता पिता हो, चाहे किसी सेवाकेन्द्र की बात है उस घर में जो भी आत्म्यायें रहती हैं, जो भी सेवाओं के निमित्त हैं उन सभी आत्म्याओं को चलाने की जिम्मेवारी, सेवा के निमित्त जो मेन हैं, मुख्य हैं उनकी है। वो तो सभी आत्म्याओं का अलग-अलग तरीके से यूज करते हैं, प्रयोग करते हैं। लेकिन हम सबका संकल्प ऐसा चलता है तो ज़रूर वो किसी न किसी विकार के वश है। इस दुनिया में हम लाखों लोगों से प्रभावित हो सकते हैं लेकिन हम सबको प्यार नहीं कर सकते। प्यार हम एक-दो को ही कर सकते हैं। वैसे यहाँ भी है कि हम चाहे किसी विशेषता से, चाहे किसी गुण से

आपको अपमानित फील कर रहा हूँ। तो अभिमान और अपमान ये व्यर्थ संकल्प का सबसे बड़ा आधार है या इसको हम कारण कह सकते हैं।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

तो परमात्मा आ करके हमारे अन्दर जो व्यर्थ को खत्म करने की बात करता है वो कहता है कि ये सारी विशेषताएं, ये सारे गुण, ये सारी कलायें और ये सारे संस्कार जो भी अच्छे-अच्छे हैं वो सब परमात्मा की देन हैं। चाहे आपकी, चाहे किसी और की। जैसे उसने आपको अपना माना, माना विकार की दृष्टि से देखा आपके अन्दर दैहिक भान आया तो वो चीज व्यर्थ चलने का आधार बन जायेगी। इसी कारण से शायद आज उन्नति नहीं हो रही है। तो अभिमान और अपमान ये दो बातें हैं जो आज हमारे व्यर्थ संकल्प चलने का आधार है। पूरी दिनचर्या में आप इसको नोट करके देखो कि मेरे में मेरे को कोई भी कम क्यों आंक रहा है, मेरी बातों को कोई कम क्यों आंक रहा है, मेरे ज्ञान को कोई कम क्यों आंक रहा है मैं भी तो यहाँ का एक सदस्य हूँ ना! तो जो व्यक्ति अपने आपको विशेष अनुभव करने लग जाता है तो उसके व्यर्थ सबसे ज़्यादा चलते हैं और यहाँ आपको ये मान लेना है कि ये ज्ञान परमात्मा का दिया हुआ है। तो परमात्मा के ज्ञान में हमारा कभी व्यर्थ नहीं चल सकता। तो अभिमान और अपमान इन दोनों से जब हम परे होंगे, अपने को आत्मिक दृष्टि में, आत्मिक स्थिति में ले आयेंगे तो निश्चित रूप से हमारे अन्दर परिवर्तन होगा।

इतने प्रभावित हैं खुद के या किसी और के, जिसके आधार से हम सबको जज कर रहे हैं। और व्यर्थ संकल्प का सिर्फ एक आधार है आज के समय में एक या तो अभिमान है किसी चीज का, या मैं उस चीज में अपने

## उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें



**प्रश्न : मेरा नाम कविता है। मैं पिछले 15 वर्षों से नॉर्मल माइग्रेन से पीड़ित हूँ। सीटी स्कैन और एमआरआई की रिपोर्ट नॉर्मल आती है। लेकिन ये माइग्रेन मुझे बहुत तकलीफ दे रहा है। मुझे किसी ने आपके इस पीस ऑफ माइंड चैनल के बारे में बताया तो मुझे ये देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। पर मुझे ये नहीं मालूम कि मेडिटेशन करते हुए माइंड में कुछ होना चाहिए, ब्लैक माइंड होना चाहिए या अपनी आत्मा से बात करनी चाहिए? क्या करना चाहिए, कृपया गाइड करें?**

**उत्तर :** हमारे पास कई ऐसे पेशेंट आये हैं कि क्या कहें कि वो बहुत ही असहनीय स्थिति में थे। जब ये पेन होता है तो रोने के अलावा उनके पास कुछ नहीं बचता। इसके लिए आप कुछ अच्छे थॉट क्रियेट करेंगे। वो हमारी कॉमेंट्री की सीड़ियां बनी हुई हैं, सीड़ी ले लें और उन्हें सुनें। उन्हें सुनते-सुनते आप उन्हीं विचारों को क्रियेट करें। आपको विचारों को एन्जॉय करना है। तब बहुत सुन्दर एनर्जी ब्रेन को जाकर आपको रिलेक्स भी करेगी। आपको ये धीरे-धीरे सीख लेना है कि मैं आत्मा हूँ, इसके बारे में क्या चिंतन करना है। परमात्मा के बारे में क्या चिंतन करना है। आप भगवान से बातें करती रहें तुम तो हमारे परमपिता हो ना, तुम तो हमारे सुप्रीम सर्जन भी हो। अब मैं तुम्हारी बच्ची और तुम्हारी बच्ची को माइग्रेन का दर्द! तुम्हें कैसे सहन होता है ठीक करो इसे। बड़े अधिकार से अपने परमपिता से बात करेंगे। सुप्रीम सर्जन है ना वो। ये भी मेडिटेशन हो जायेगा। यानी हम उससे जुड़ गये ना! हम उसे अपना फ्रेंड बना लें। वो हमारा सुप्रीम सर्जन भी है। इस तरह से आप राजयोग करें। ताकी आपका मन आनंद से भरपूर रहे। आपको दो ही चीज करनी हैं एक मन को खुश करना और दूसरा मन को शांत करना। आप इन सब बातों से परे होकर ये सब विचार करेंगे। मन कभी खाली नहीं होता, वो तो विचार करेगा ही। तो आप ऐसे सुन्दर विचार करके अपने मन को खुशी देंगे। बस आपको ध्यान ये रखना है कि ब्रेन पर किसी भी तरह का प्रेशर न आये। हर बात को इजली लें। और मन में संकल्प कर लें मुझे हर चीज को एन्जॉय करना है। हर बात को एक्सेप्ट करना है। ये आपके लिए बहुत अच्छा रहेगा।

चार बातें आप अच्छे से जान लें। जैसे कि आपने मेडिटेशन का कहा तो आपको रोज एक घंटा मेडिटेशन तो करना ही है विशेष रूप से इस बाँडी के लिए, अपने मन को प्रसन्न करने के लिए, अपने को

एनर्जी देने के लिए। जितना भी हो सहज रूप से एक घंटा न हो तो आधा-आधा घंटा दो बार कर लें। सोने से पहले अपने सब्कोन्शियस माइंड में ये थॉट भरना

## मन की बातें

- राजयोगी ब्र. कु. सूर्य



है बहुत विश्वास के साथ, भावना के साथ कि मेरा माइग्रेन ठीक हो गया है। पाँच बार कर दें कि मेरा माइग्रेन बिल्कुल ठीक हो गया है। तो सब्कोन्शियस माइंड इसको कमांड के रूप में स्वीकार कर लेता है और ये जो हमारा सब्कोन्शियस माइंड है ये रात के समय बहुत पॉवरफुल सर्जन है। ये उस चीज को हील करेगा, ठीक करेगा। तीसरी चीज है पानी चार्ज करके पीना। पानी को दृष्टि देकर सात बार संकल्प कर दें कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ या मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। थोड़ा पी लें और थोड़ा सिर पर भी डाल लें। चौथी चीज है ब्रेन को एनर्जी देना। जो इन सबमें मॉस्ट पॉवरफुल, मोस्ट इम्पोर्टेंट है और उसका तरीका यही है दोनों हाथों को मलना है और हाथों को मलने से हाथों में एनर्जी आती है तीन बार याद कर लें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। अब अपने हाथों को खुला छोड़ दीजिए। फिर इन हाथों को अपने सिर पर रख देंगे। और साथ ही संकल्प भी कर लें कि मेरा ब्रेन नॉर्मल हो रहा है। ऐसा एक मिनट और दस बार करेंगे। आप इसे तीन मास तक कर लें। और अगर आप इसके लिए दवाई ले रही हैं तो दर्द अगर बढ़ जाता है तो तब दवाई ले लेनी चाहिए। बल्कि जब दवाई लें तो दवाई को भी चार्ज कर लेना चाहिए। दवाई हाथ में लें और 7 बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तो दवाई में पॉवर आ जायेगी। और वो दवाई काम करेगी।

**प्रश्न : क्या हम पानी चार्ज करके ऐसे व्यक्ति को दें जिसको दूर का न दिखता हो। तो क्या उस इंसान का विज्ञान इम्पूट**

**हो सकता है?**

**उत्तर :** हाँ, केवल पीने से ही नहीं, आँखों में डालने से भी और साथ-साथ जैसे हमने चार बातें माइग्रेन के सम्बन्ध में बताई वो हर बीमारी में यूज की जा सकती हैं। चाहे वो राजयोग करता है या नहीं करता है। वो रात को सब्कोन्शियस माइंड में थॉट को तो भर ही सकता है कि अब मुझे सबकुछ क्लीयर दिखने लगा है। नज़दीक की विज्ञान, दूर की विज्ञान मेरी बिल्कुल क्लीयर हो गई है। जैसे मैं दूर तक देख रहा हूँ। सब स्पष्ट दिखता है। ये विज्ञान बनायें आप। मान लो 100 मीटर पर एक व्यक्ति खड़ा है, या पेड़ है हम उसको बिल्कुल साफ-साफ देख रहे हैं, पहचान सकते हैं कि ये कौन-सा व्यक्ति खड़ा है। साथ-साथ आप पानी चार्ज करके मैं परमपवित्र आत्मा हूँ इस संकल्प से थोड़ा पियेंगे और थोड़ा आँखों पर लगायेंगे। लेकिन महत्वपूर्ण रहेगा इसमें भी ब्रेन को एनर्जी देना। टाइम फिक्स करके ब्रेन को एनर्जी दें। तो ब्रेन का जो हिस्सा आँखों को कंट्रोल कर रहा है जो नर्व आँखों तक जा रही है वो भी एनर्जेटिक हो रही है। वो भी बहुत एनर्जेटिक हो जायेंगे। और ये चीज ठीक हो सकती है। विश्वास हो जाये कि इससे बिल्कुल ठीक हो जायेगा, तो ये बहुत जल्दी काम करेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपको अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

